नैसर्गिक न्यूझीलंड

पल्लव सेठी - पर्व सेठी

नैसर्गिक
न्यूज़ीलैण्ड

Nesargik New Zealand

by Pallav & Parv Sethi

प्रकाशन : 24 मई 2016

क़ीमत : **₹ 200/-**

लेखन : **पल्लव सेठी**

076978-50000

sethi.pallav04@gmail.com

छायाचित्र : **पर्व सेठी**

070240-50000

parvsethi96@gmail.com

www.parvsethi.com

हिन्दुस्तान अभिकरण, पंधाना रोड, खण्डवा (म.प्र.)

प्रकाशक एवं वितरक : **रंग प्रकाशन**

33, बक्षी गली, राजबाड़ा, इन्दौर 452 004 (म.प्र.)

0731-2538787, 4068787

info@jainsonbookworld.com

visit our online book shop

www.jainsonbookworld.com

ISBN No. : 978-81-88423-67-5

रूपांकन : sanjay patel productions
0 9 7 5 2 5 2 6 8 8 1

© इस पुस्तक के किसी भी अंश को बिना लेखक की अनुमति के उपयोग में लिया जा सकता है। स्रोत का उल्लेख करेंगे तो अच्छा लगेगा।

समर्पण...

जिस आँचल की छाँह
दुनिया की हर तपन से
हमें बचा ले जाती है...
ऐसी ममतामयी माँ
शालिनी सेठी
को
सादर...

नैसर्गिक न्यूज़ीलैण्ड

अंतरराष्ट्रीय ख्याति के छायाकार पद्मश्री भालू मोंढे के शुभाशीष

प्रिय पल्लव एवं पर्व सेठी

सबसे पहले तो आपको उत्कृष्ट फ़ोटोग्राफ़ी और लाजवाब लोकेशन्स के चयन के लिए बधाई।

फ़ोटोग्राफ़ी एक टेक्नीक तो है ही लेकिन उससे कहीं ज़्यादा एक कला है। एक सक्षम फ़ोटोग्राफ़र वह होता है जो अपनी आँखों से अधिक अपने दिल-दिमाग़ से देखता है और अपने हर क्लिक को विलक्षण बनाने की कोशिश करता है।

मुझे इस बात का ख़ास इत्मीनान है कि जब नई पीढ़ी मोबाइल से चित्र खींचने को बड़ा हुनर मानने लगी है तब आपने बाक़ायदा एक प्रोफ़ेशनल कैमरे से न्यूज़ीलैंड की करिश्माई तस्वीरों को खींचा है। इसके लिए आपको विशेष साधुवाद।

आख़िर में बस इतना ही कहना चाहूँगा कि चाहे फ़ोटोग्राफ़ी हो, कविता हो, संगीत हो या चित्रकला... वह कलाकार से उसका 100% माँगती है। आप यदि अपनी कला के प्रति गंभीर हैं तो ऐसा करना अनिवार्य है।

मुझे आपको अपनी शुभेच्छाएँ देते हुए विशेष प्रसन्नता इसलिए भी है कि आपने अपनी न्यूज़ीलैंड यात्रा की दृश्यावली को एक आकर्षक स्वरूप में अपने परिजनों और मित्रो के साथ साझा किया।

आपके सारे चित्रों को देखकर विशेष ख़ुशी इस बात की हुई कि इस यात्रा में आपने पर्यावरणप्रेमी देश की ख़ूबसूरती को भी उतनी ही ख़ूबसूरती से क़ैद किया है। आप दोनों अभी नौजवान हैं, जीवन में बहुत कुछ करना शेष है।

आशीर्वाद के रूप में यही कहूँगा कि आप दोनों के मन में कलाप्रेम बना रहे और आप कुदरत के करिश्मों का सम्मान भी करते रहें।

अनेक शुभकामनाओं के साथ
आपका...

Bhalu Monde

भालू मोंढे :
जन्म 1944 - इन्दौर। 1964 में इंग्लैंड में फ़ोटोग्राफ़ी के तकनीकी पहलुओं का अध्ययन। 1969 में जर्मनी में फ़ाइन आर्ट्स की शिक्षा। 1975 से इन्दौर में। एन.एस. बेन्द्रे और जगदीश स्वामीनाथन जैसे चित्रकारों एवं राहुल बारपुते, पं. कुमार गंधर्व, वसंत पोत्दार और अशोक वाजपेयी जैसे संस्कृतिकर्मियों का सान्निध्य। फ़ोटोग्राफ़ी, चित्रकला, पर्यावरण और पुरातत्व संरक्षण में गहन रूचि एवं सक्रियता।
द नेचर वॉलिंटियर्स के नाम से एक स्वयंसेवी संगठन के संस्थापक। सन् 2016 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित। देश-विदेश की प्रतिष्ठित कला दीर्घाओं में एकाधिक नुमाइशों का आयोजन।

अपनी बात

न तो हम स्थापित लेखक हैं न ही हुनरमंद फ़ोटोग्राफ़र। जवानी की दहलीज़ से बाहर आकर दुनियादारी सीखना शुरू किया है। अक्ल भी कुछ कच्ची ही है लेकिन हाँ हौसला मज़बूत है जो कुछ तो विरासत से मिला है और कुछ आप जैसे अपनों से। उसी हिम्मत और संबल का तक़ाज़ा है कि हमने हाथों में क़लम और कंधे पर कैमरा उठा लिया है। शब्दों के साथ दोस्ती की और उसे काग़ज़ पर उतारते गए। कुदरत के नज़ारों ने खुद हमें अपनी मुहब्बत का ग़ुलाम बनाया और जो-जो ख़ूबसूरत दिखाया उसे कैमरे में क़ैद करने का मोह संवरण नहीं हो पाया।

न्यूज़ीलैंड यानि कुदरत की नेमतों और नवाज़िशों का जीता-जागता दस्तावेज़। उसकी आबोहवा में ही कुछ ऐसा करिश्मा है कि वहाँ गूँगा भी ग़ज़ल पढ़ने लगे और लंगड़ा भी दौड़ने लगे। फिर हमारे साथ तो आपकी अनमोल नसीहतें भी थीं। जो कुछ कच्चा-पक्का कर पाये उसे आपके सामने रखते हुए घबराहट हो रही है। यक़ीन है कि आप हमारी कमियों पर निःसंकोच इशारा करेंगे और यदि कुछ ठीक लगा तो पीठ थपथपाने से भी गुरेज़ नहीं करेंगे। हमें पता है कि आपने हम पर बचपन से प्यार लुटाया है और हम पर अपनी तमाम दुआएँ निछावर की हैं। बस... उसी प्यार के मुंतज़िर हैं हम क्योंकि हमारा भी आप पर हक़ तो उतना ही है जितना आपका हम पर।

हमारे ख़्वाबों को आप तक पहुँचाने में श्री संजय पटेल एवं टीम एडराग की मशक्कत हमारे प्यार भरे शुक्रिया का हक़ रखती है। आप सबकी हौसलाअफ़ज़ाई ने हमें ज़िंदगी की पहली किताब को मुकम्मिल करने की हिम्मत दी है। यदि बुज़ुर्गों के आशीर्वाद बने रहे तो लिखने-पढ़ने का यह सिलसिला जारी रखने की कोशिश करेंगे।

ज़िंदगी को पढ़ना हमने अपने पापा श्री आलोक सेठी से सीखा है। वे हमेशा हमें डिग्रियों के साथ जीवन के मूलमंत्रों से मुख़ातिब रहने का जज़्बा देते आए हैं। आदरणीय दादी माँ, बड़े पापा, बुआ एवं परिवार ने प्रकृति से प्रेम करना सिखाया।

आप सबको प्रणाम करते हुए और 'नैसर्गिक न्यूज़ीलैंड' आपके हाथों में सौंपते हुए हमें जीवन की एक अनमोल ख़ुशी मिल रही है।

आपके...
पल्लव और पर्व सेठी

PARK
Only

मुंबई से सिंगापुर 5 घंटे, सिंगापुर से ब्रिसबेन 7, ब्रिसबेन से क्वींसटाउन फिर 5 घंटे और रास्ते का ब्रेक - पूरे 24 घंटे का सफ़र पूरा हो चुका है। शरीर थककर चूर है, आँखें बोझिल और दिमाग़ मानो काम करने से इनकार कर रहा है !... पूरी फ़्लाइट का माहौल अलसाया सा... कानों में पड़ता है एयरहोस्टेस का अनाउंसमेंट 'आप क्वींसटाउन के ऊपर हैं - अपने सीट बेल्ट बाँध लीजिए। निगाहें खिड़की की ओर जाने को बेसब्र हैं... धरती पर नज़र जाते ही मानो नज़र को ही नज़र लग गई है... सफेदी की चमकार वाले सुपर रिन जैसी धुली हुई बर्फ़ की सफ़ेद झक्क चोटियाँ, तलहटी में लहलहाते हरे दरख़्त। उनकी जड़ों और तनों को चूमता झील का निर्मल जल।

इसमें जगह बनाती ख़ूबसूरत नौकाएँ। सुंदर सलोने घर, घुमावदार रास्ते, छोटी-बड़ी बहुतेरी। थकान का सारा आलम पल भर में ख़त्म हो गया है। आँखों ने जैसे स्वप्न में एक लाजवाब पेंटिंग देख ली है। मम्मी कह रही हैं यदि न्यूज़ीलैंड नाम की फ़िल्म का ट्रेलर ही यदि इतना सुन्दर है तो फ़िल्म बेमिसाल होगी ही। तन्द्रा टूट गई है जब हलके से झटके के साथ हवाई जहाज़ ने एयरपोर्ट को स्पर्श किया है। दुनिया के अनेक एयरपोर्ट्स को देखने का मौक़ा मिला है पर बर्फ़ीले पहाड़ों में क़ैद हवाई अड्डे से पहली बार साक्षात्कार हुआ। क्वींसटाउन यानी रानी का नगर... दक्षिण न्यूज़ीलैंड में स्थित एक बेहद प्यारा पर्यटक शहर इसे आप दुनिया के सबसे सुन्दर या सुन्दरतम शहरों में से एक भी कह सकते हैं।

दो यूरोपियन्स सबसे पहले यहाँ आए... दो अद्‌भुत पहाड़ों पर उनकी नज़र पड़ी। अनायास मुँह से निकला... 'रिमार्केबल' और बस जैसे यही इन पहाड़ों का नामकरण हो गया। किसी माँ की गोद में सिमट कर बैठे और किलकारी भरते नन्हें शिशु की तरह इन दोनों पहाड़ों में बसा है यह नायाब शहर क्वींसटाउन।

इन यूरोपियन्स ने रास्ते बनाए, जिसके लिए चीन से मज़दूर बुलाए गए। वे सड़कों के लिए खुदाई करते-करते अचानक अवाक् हो गए। उन्हें माउंट ओरम से निकली शॉर्टओवर नदी में कुछ चमकता दिखा। हाथ में लिया तो सोना था। उन्होंने यूरोपियन्स को बताया, ईमानदार जवाब मिला-सोना आपको मिला है आप ही रखिए, लेकिन किसी को बताना मत-नहीं तो सोने के लालच में लोग सारी धरती खोद डालेंगे। ज़मीन और ज़मीर दोनों ख़राब हो जाएँगे। बचपन में

हिन्दी व्याकरण में यमक अलंकार पढ़ा था 'कनक-कनक ते सो गुनी मादकता अधिकाय, यह खाए बौराए नर वह पाये बौराए... अर्थात् धतूरा खाने के बाद आदमी पागल होता है पर सोना पाते ही पागल हो जाता है। स्वर्णिम आभा से बौराए चायनीज़ मज़दूरों से रहा नहीं गया और बात फैल गई... चीन से लोगों के झुण्ड यहाँ आ गए और गोल्डरश हुआ। सभी लोग हर तरफ़ सोना निकालने में लग गए। बिना मेहनत से मिली दौलत और बुरी आदतों का चोली-दामन का साथ है।

गोल्डरश के बाद शराब बनना शुरू हुई... अफ़ीम आई और फिर आए झगड़े। अंततः यूरोपियन्स को सोना निकालना बंद करना पड़ा।

चीनियों की वजह से यहाँ के अधिकांश पहाड़ों और वादियों के नाम चायनीज़ हैं। चीनी मज़दूरों ने बेहद परिश्रम से ये रास्ते बनाएँ। पहाड़ों को काटने के लिए उस ज़माने में मशीनें नहीं थीं। इन्होंने चोटी से पानी की तेज़ धार बनाकर उसे पहाड़ों को काटा। उस ज़माने में बनाई गई सड़कों में से एक को आज भी ज्यों का त्यों

पर्यटकों के लिए सुरक्षित रखा हुआ है। ऐसी बातें हिन्दुस्तान में पुरातत्व का संरक्षण करते वक़्त कितनी ज़्यादा नज़रअंदाज़ होती हैं! यह रास्ता दुनिया के कठिनतम बीस मार्गों में से एक है। लैंडरोवर से इसकी सैर एक रोमांचकारी अनुभव देती है। जान सांसत में आना किसे कहते हैं इसे जानने के लिए एक बार यहाँ ज़रूर आना चाहिए। गति संतुलन का अनोखा तालमेल और एडवेंचर जुगलबंदी नज़र करता आता है यहाँ।

हमारी लैंडरोवर के ड्रायवर क्रिस परवीन की पैदाइश तो लंदन की है लेकिन ख़तरों से खेलने का शौक़ उन्हें यहाँ क्वींसलैंड ले आया है। वे बीते बाइस बरसों से यहीं बसे हैं। उन्हीं के गाँव में उनका एक और दोस्त है। उनके गाँव से 100 किलोमीटर दूर एक दूसरे गाँव की पूरी की पूरी ज़मीन क्रिस के कैनेडियन दोस्त परलान्स की है। 100 किलोमीटर लंबी ज़मीन और एक आदमी की ! सुनकर ग़श आ गया। नज़दीक के गाँव ऐरोटाउन में क्रिस के इस रईस दोस्त के तीन गोल्फ़ कोर्स भी हैं। आपने हॉलीवुड मूवी लॉर्ड ऑफ़ द रिंग्स देखी ही होगी ? उसकी शूटिंग यहीं हुई है। है न यह कृष्ण और सुदामा के सखा भाव की कहानी... चलिए एक बार फिर क्वींसलैंड पर बात की जाए।

आपने नदी में नाव या बोट से सैर की होगी। यहाँ आपकी जीप नदी के अंदर बिंदास तैरती है। तेज़ गति से बहती पहाड़ी नदी के पानी को चीरते हुए लैंडरोवर को दौड़ते देखना एक अभूतपूर्व अनुभव है... रोमांच अभी बाक़ी है और इसकी पराकाष्ठा है जेट बोट की सैर।

शॉटओवर नदी की सैर के दौरान आपके रोंगेटे खड़े हो सकते हैं क्योंकि इसके लिए 700 हार्स पॉवर की विशेष बोट बनाई गई है जो मीलों गहरे पानी से लेकर मात्र 4 सेंटीमीटर पानी पर भी 360 डिग्री का टर्न 100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से ले सकती है। बल्कि यह कहना बेहतर होगा कि लेती है। 18 मील की इस यात्रा की यादों को संजोने के लिए सशुल्क फ़ोटो और वीडियो भी उपलब्ध करवाया जाता है। यही दुनिया की दूसरे नंबर की वह सबसे बड़ी नदी है जो आज भी सोना उगल रही है यहाँ आपको सोना खोजते हुए लोग और ग़ोताख़ोर नज़र आते हैं। न्यूज़ीलैंड सरकार ने बाक़ायदा इसकी इजाज़त दे रखी है। जिसे मिले सोना-वही उसका मालिक। पर हमारे लिए तो इस सैर-सपाटे का अनुभव और रोमांच चकमते सोने से ज़्यादा अनमोल था।

वाइन मेकिंग न्यूज़ीलैण्ड का प्रमुख उद्योग है। इस यात्रा में वाइन यार्ड की सैर भी शामिल है। गिब्सटन वैली नाम की इस जगह पर आपको अंगूर उगाने से लेकर शराब बनाने तक की हर प्रक्रिया से रूबरू करवाया जाता है। गिब्सटन वैली को वैली ऑफ़ वाइन्स भी कहते हैं। यह वहाँ की देशी शराब निर्माण इकाइयाँ हैं लेकिन हमारे यहाँ की देसी भट्टियों और इनमें ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है। यहाँ हर काम पर्यावरण रक्षा के मद्देनज़र है और प्लांट में बला की साफ़-सफ़ाई नज़र आती है।

क्वीन्सटाउन स्थित हमारी होटल नोवोटेल की लोकेशन भी करिश्माई थी। कमरे की खिड़की से नज़र आती, इठलाती, बलखाती पहाड़ी, नदी और उसका कलरव आपको अपनी बालकनी से हटने की इजाज़त नहीं देता था।

उसके ठीक पीछे 12 हेक्टेयर का एक लाजवाब बाग़ नज़र आता है जिसे क्वीन्सटाउन काउंसिल ने विकसित किया है। सन् 1857 पर आयोजित इस बग़ीचे के शुभारंभ प्रसंग पर लगाए गए ओक के दो पेड़ों में से एक आज भी तरोताज़ा है।

Patch
SALE

इस बाग़ में बने रास्ते पर वॉकिंग, साइकिलिंग और स्केटिंग करने वालों का उल्लास कुछ अलग ही नज़र आता है। इसी से सटी हुई है एक ख़ूबसूरत और विशालकाय झील। इस पर उड़ते हुए सफ़ेद परिन्दे पानी की स्वच्छता और सफ़ेदी से जैसे कॉम्पीटिशन करते हैं तो मोटर बोट गुदगुदियाँ।

ज़िंदगी की आपाधापी के बाद सुकून तलाशने वाले पर्यटकों को इत्मीनान इसी झील के किनारे आकर मिलता है।

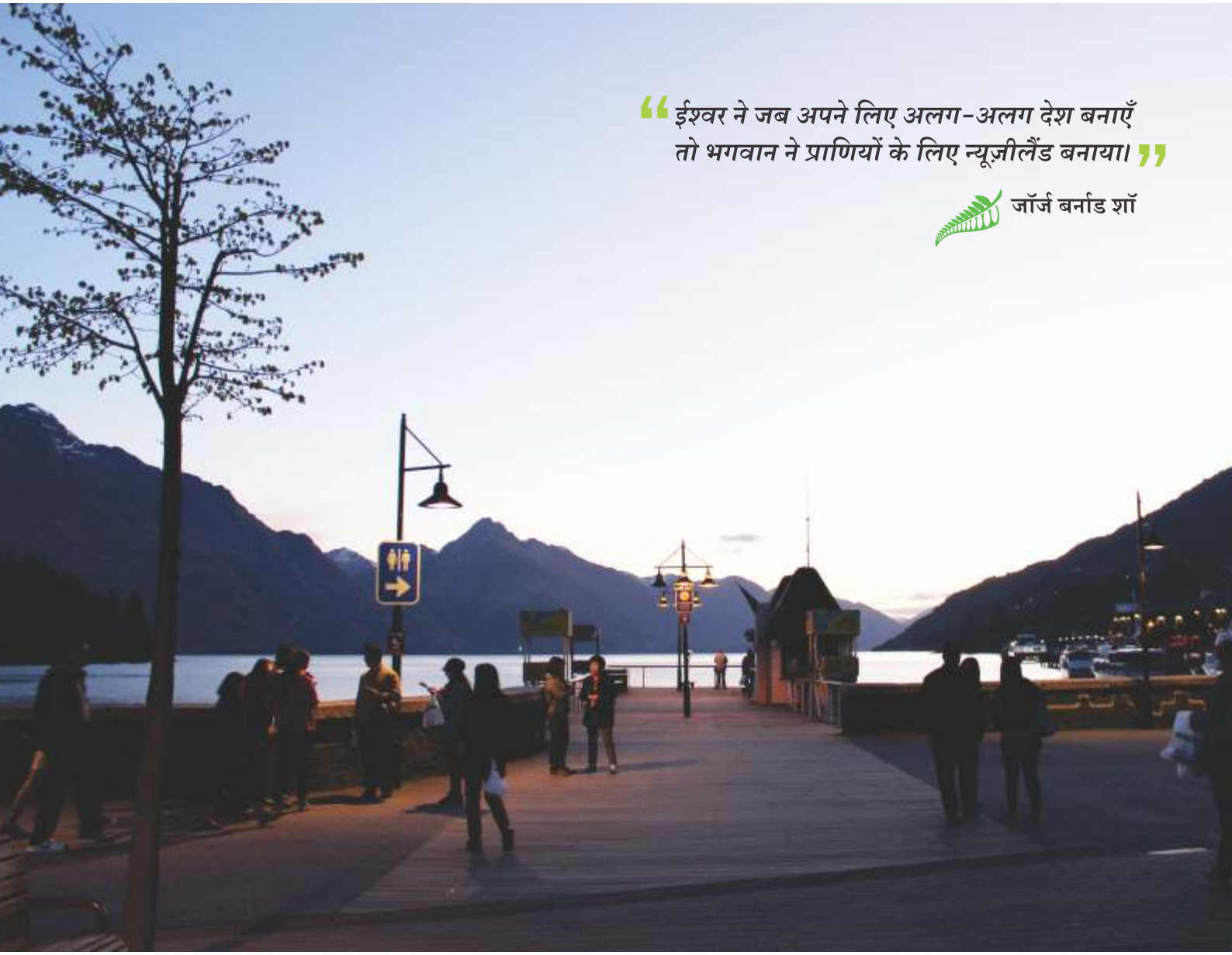

“ईश्वर ने जब अपने लिए अलग-अलग देश बनाएँ
तो भगवान ने प्राणियों के लिए न्यूज़ीलैंड बनाया।”

जॉर्ज बर्नाड शॉ

मरीन ड्राइव की तरह इस झील के साथ रास्ते भी जुगलबंदी करते नज़र आते हैं। कुछ ऐसे रोड्स भी हैं जो ऊँचे पहाड़ों से आकर झील वाली सड़क से गलबहियाँ करने लगते हैं। 45 डिग्री से भी अधिक का उनका ढलान अत्यंत लुभावना है।

“अगर आप स्वर्ग का छोटा सा टुकड़ा ख़रीदना चाहते हैं तो आपको न्यूज़ीलैंड में अपना घर बनाने की ज़रूरत है।”

रोड डोनॉल्ड

मात्र 13000 आबादी वाले क्वीन्सटाउन की वादियों में दो सड़कों को आपस में जोड़ने के लिए अनेकों जगहों पर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं।

पूरे शहर में किसी भी चौराहे पर रेड सिग्नल नहीं है और डिवाइडर भी नहीं। यही नहीं पूरे साउथ न्यूज़ीलैंड में सिर्फ़ क्राइस्टचर्च को छोड़कर कहीं भी ट्राफ़िक पुलिस या सिग्नल का नामोनिशान नहीं है। रेलवे क्रॉसिंग पर गेट भी नहीं है। लोग ख़ुद-ब-ख़ुद यातायात नियमों का पालन करते हैं।

देश में इतने अधिक पुल और गुफ़ाएँ हैं कि शहर से बाहर सारे पुलों को सिंगल-लेन बनाना पड़ा है। अनेक जगहें ऐसी हैं कि पुल के बीच में रेल की पटरी जा रही है और उसी के साथ रोड।

अनुशासन कुछ ऐसा है कि कहीं भी किसी को कोई दिक्क़त नहीं होती। पुलिस थानों का परिवेश ऐसा है जैसे आप किसी पंचसितारा होटल की स्वागत दीर्घा में आ गए हों।

ऐतिहासिक चर्च हैं, ख़ाली-ख़ाली रास्ते हैं और पर्यटकों को आकर्षित करने वाली प्यारी सी दुकानें। सुरक्षा के लिए जगह-जगह फ़ायर फ़ाइटर्स हैं लेकिन फ़ायर ब्रिग्रेड नहीं क्योंकि शहर के नौजवान ही इतने ट्रेंड हैं कि मौक़ा पड़ने पर ख़ुद आग बुझा लेते हैं। दुर्घटना हुई नहीं और सायरन बजने लगते हैं, मोबाइल पर संदेश आते हैं और नौजवानों की टीम स्व-स्फूर्त आग बुझाने में जुट जाती है।

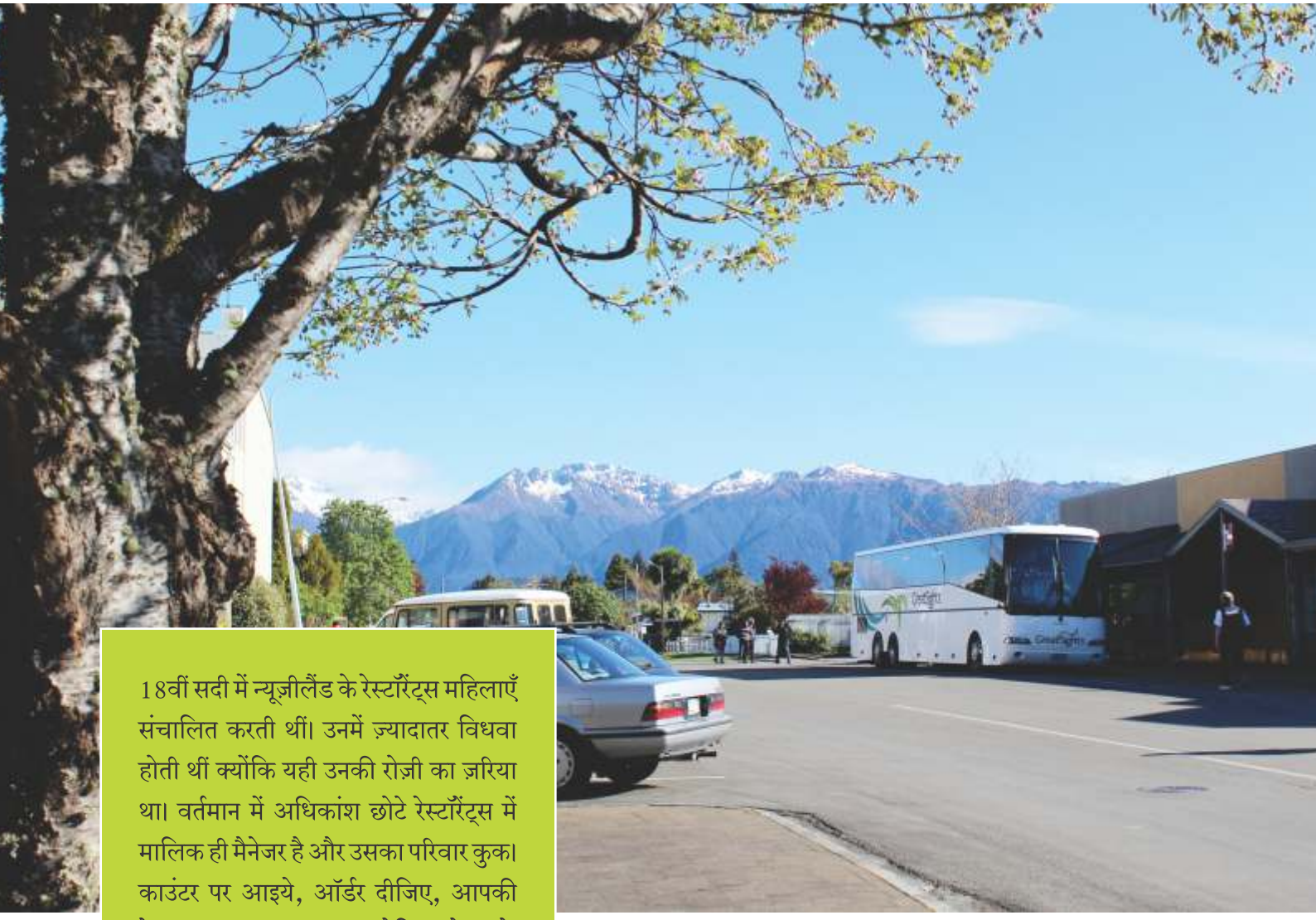

18वीं सदी में न्यूज़ीलैंड के रेस्टॉरेंट्स महिलाएँ संचालित करती थीं। उनमें ज़्यादातर विधवा होती थीं क्योंकि यही उनकी रोज़ी का ज़रिया था। वर्तमान में अधिकांश छोटे रेस्टॉरेंट्स में मालिक ही मैनेजर है और उसका परिवार कुक। काउंटर पर आइये, ऑर्डर दीजिए, आपकी टेबल पर खाना आ जाएगा। लेकिन भोजन के उपरांत आपको कैश काउंटर पर स्वयं जाकर क़ीमत अदा करनी होगी। रेस्टॉरेंट आपकी ईमानदार जानकारी पर पूरा भरोसा करता है। साफ़-सफ़ाई कुछ इस क़दर है और सरकार का आदेश इतना कड़क कि फ़्रिज रात को डिफ़्रॉस्ट करने के बाद ही रेस्टॉरेंट को बंद करने की इजाज़त दी जाती है। यदि आप रेस्टॉरेंट चलाना चाहते हैं तो आपके पास शैफ़ की डिग्री होना अनिवार्य है। न्यूज़ीलैंड अपने हाइजीन और पर्यावरण के लिए इतना ज़्यादा चाक-चौबंद है कि एयरपोर्ट पर ही पर्यटकों द्वारा लाई गई खुली खाद्य सामग्री और दवाइयों की जाँच की जाती है। तसल्ली के बाद ही उसे न्यूज़ीलैंड में प्रवेश मिलता है। आपके लिए मशवरा यह है कि जब कभी न्यूज़ीलैंड जाएँ तो सीलबंद खाद्य सामग्री ले जाएँ और दवाइयों के साथ में डॉक्टर का पर्चा भी।

क्वीन्सटाउन से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत है मिल्फ़ोर्ड साउंड जाने का रास्ता। पूरे रास्ते में साथ-साथ चलती है वॉकीटीपू लेक। 80 किलोमीटर लंबी और अंदाज़न 4 किलोमीटर चौड़ी यह झील कुदरत से धरती को मिला अनोखा उपहार है। कहीं-कहीं इसकी गहराई 300 मीटर तक है तो कहीं 450 मीटर। तक़रीबन 1800 बरस पहले यह वर्तमान स्थिति से 300 मीटर ऊपर तक बहती थी। एक विनाशकारी भूकंप में इसका पानी नीचे चला गया और बाक़ी रह गया मोती की तरह चमकता यह रास्ता।

एक ओर बर्फ़ से आच्छादित पहाड़ और दूसरी ओर सुरम्य झील... रास्तों को चूमते पेड़ और चहचहाते पक्षियों ने इस रास्ते को वर्ल्ड हेरीटेज की सूची में शामिल करवा लिया है। इस झील के साथ रास्ते में आपका स्वागत करने के लिए अनेक छोटी-बड़ी पहाड़ी नदियों से भी मुलाक़ात होती है। इसका पानी 99.9 प्रतिशत शुद्ध है यानी हमारे यहाँ के मिनरल वॉटर से भी बेहतर।

नदियों के किनारे परिंदे आपके साथ आकर मस्ती को करते ही हैं बतियाते भी हैं। सिर्फ़ फ़र्क़ यह है कि वे दिल की भाषा में बात करते हैं। आप उनकी ज़ुबान तब ही समझ सकते हैं जब आपको दिल की भाषा आती हो।

क्लेडाउ नदी अपनी बाढ़ के साथ बहुत सारे नुकीले पत्थर बहाकर लाती है। पत्थर और पानी की अठखेलियाँ जिन अजूबों को जन्म देती है उन्हें 'द चेज़्म' कहा जाता है। पानी जब पत्थर को पूरी गति से गोल घुमाता है तो क़ुदरत के करिश्मे से कई शक़्लें उभरती हैं जो आपका मन मोह लेती हैं। गोया प्रकृति भी एक शिल्पकार का स्वांग धर लेती है।

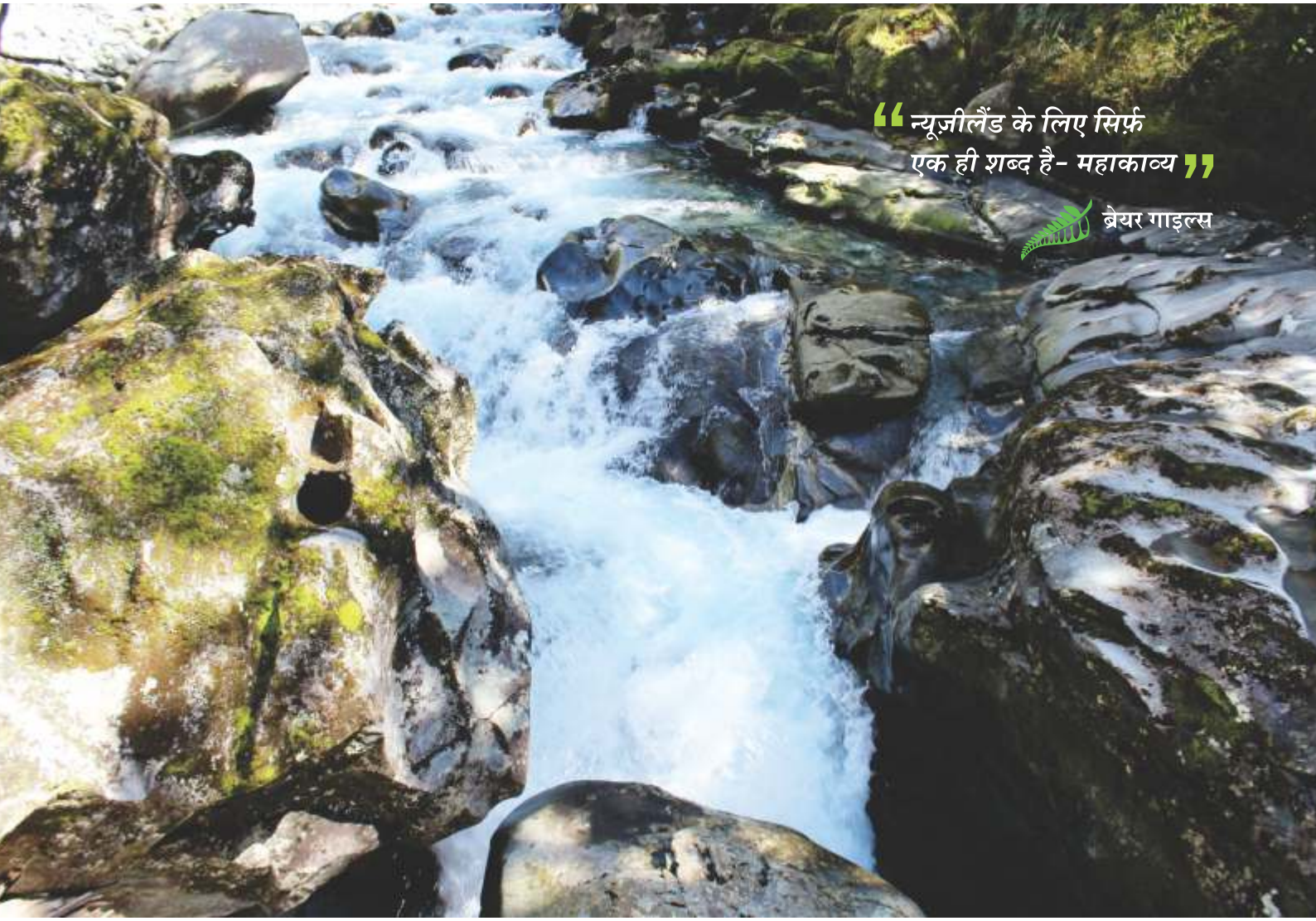

"न्यूज़ीलैंड के लिए सिर्फ़ एक ही शब्द है- महाकाव्य"

ब्रेयर गाइल्स

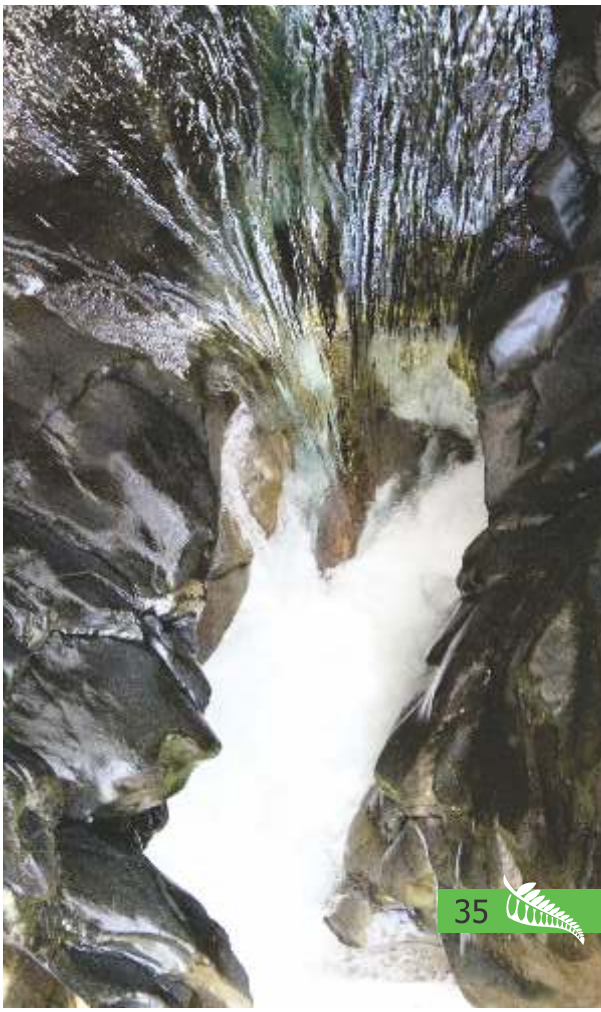

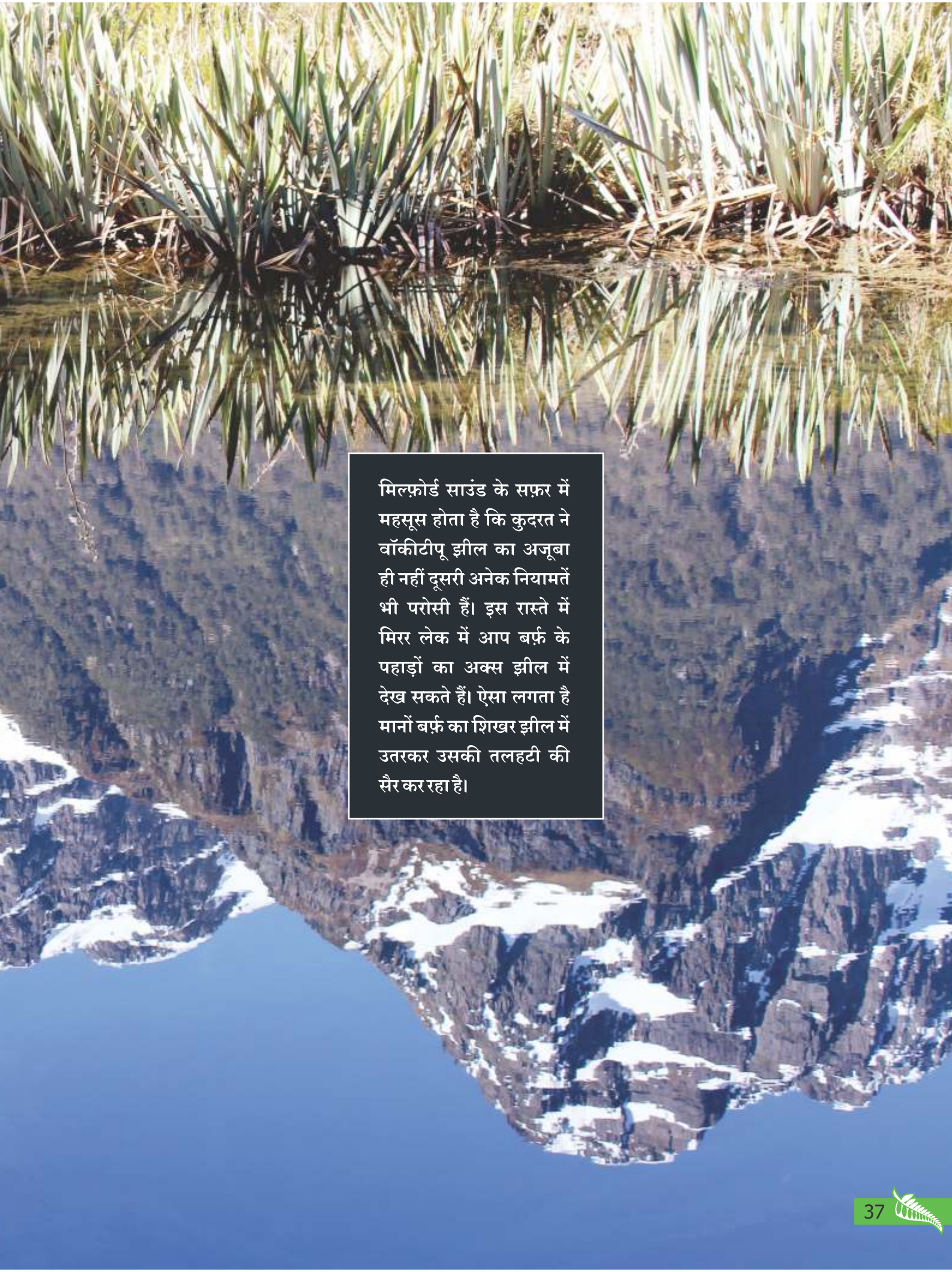

मिल्फ़ोर्ड साउंड के सफ़र में महसूस होता है कि कुदरत ने वॉकीटीपू झील का अजूबा ही नहीं दूसरी अनेक नियामतें भी परोसी हैं। इस रास्ते में मिरर लेक में आप बर्फ़ के पहाड़ों का अक्स झील में देख सकते हैं। ऐसा लगता है मानों बर्फ़ का शिखर झील में उतरकर उसकी तलहटी की सैर कर रहा है।

फ़र्न के छोटे-छोटे पौधे आपने अपने गमलों में लगाए होंगे जिन्हें छाँव की ज़रूरत पड़ती होगी। यहाँ न्यूज़ीलैंड में फ़र्न के बड़े-बड़े पेड़ आपको छाँव देने का काम करते हैं। इतने ख़ूबसूरत कि आपकी आँखें निहारते हुए थक जाएँ। फ़र्न यहाँ का राष्ट्रीय शुभंकर है।

न्यूज़ीलैंड के राष्ट्रीय ध्वज को और आकर्षक बनाए जाने के लिए इसे बदलना प्रस्तावित है। दुनियाभर के कलाकारों से आमंत्रित डिज़ाइनों में से श्रेष्ठ का चुनाव जनमत करेगा। अरे हाँ! ध्वज से याद आया दुनियाभर में न्यूज़ीलैंड ही ऐसा विरला देश है जिसके दो राष्ट्रीय गीत हैं।

ट्रिप एडवाइज़र जैसी विश्वसनीय वैबसाइट ने मिल्फ़ोर्ड साउंड को दुनिया के सबसे लोकप्रिय एवं फ़ेवरेट पर्यटन स्थलों घोषित किया है। साउंड का मतलब है समुद्र का वह हिस्सा जो ज़मीन के दिल में हौले से अतिक्रमण कर झील की शक़्ल में एक सुंदर स्थान बना लेता है। मिल्फ़ोर्ड साउंड के रास्ते 21 किलोमीटर का रास्ता तो ऐसा है जहाँ हमेशा हिम-स्खलन का ख़तरा बना रहता है। बर्फ़ में चलने वाले वाहनों के टायर्स में चारों ओर एक ख़ास तरह की साँकल लगाई जाती है जो उन्हें किसी दुर्घटना से बचाती है। मई से नवंबर तक इस रास्ते पर बिना साँकल आने की इजाज़त नहीं होती।

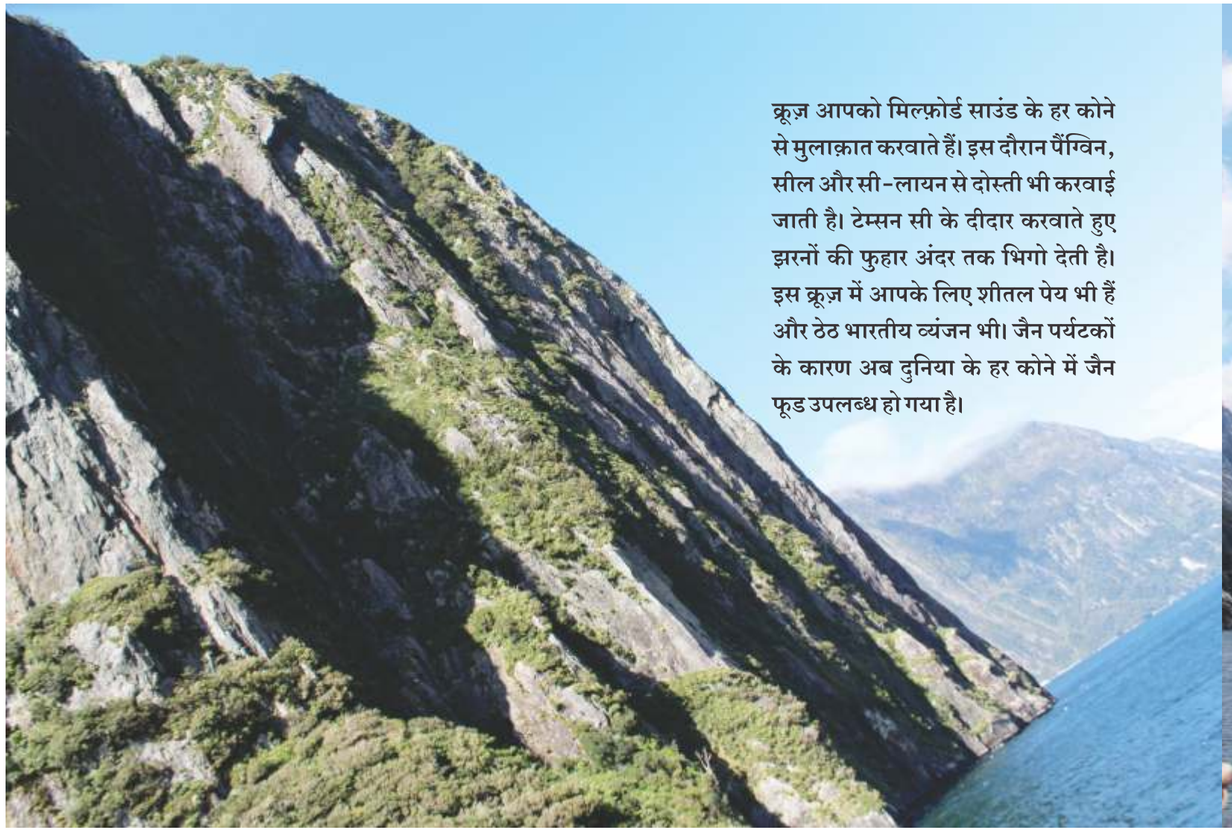

क्रूज़ आपको मिल्फ़ोर्ड साउंड के हर कोने से मुलाक़ात करवाते हैं। इस दौरान पेंग्विन, सील और सी-लायन से दोस्ती भी करवाई जाती है। टेम्सन सी के दीदार करवाते हुए झरनों की फुहार अंदर तक भिगो देती है। इस क्रूज़ में आपके लिए शीतल पेय भी हैं और ठेठ भारतीय व्यंजन भी। जैन पर्यटकों के कारण अब दुनिया के हर कोने में जैन फूड उपलब्ध हो गया है।

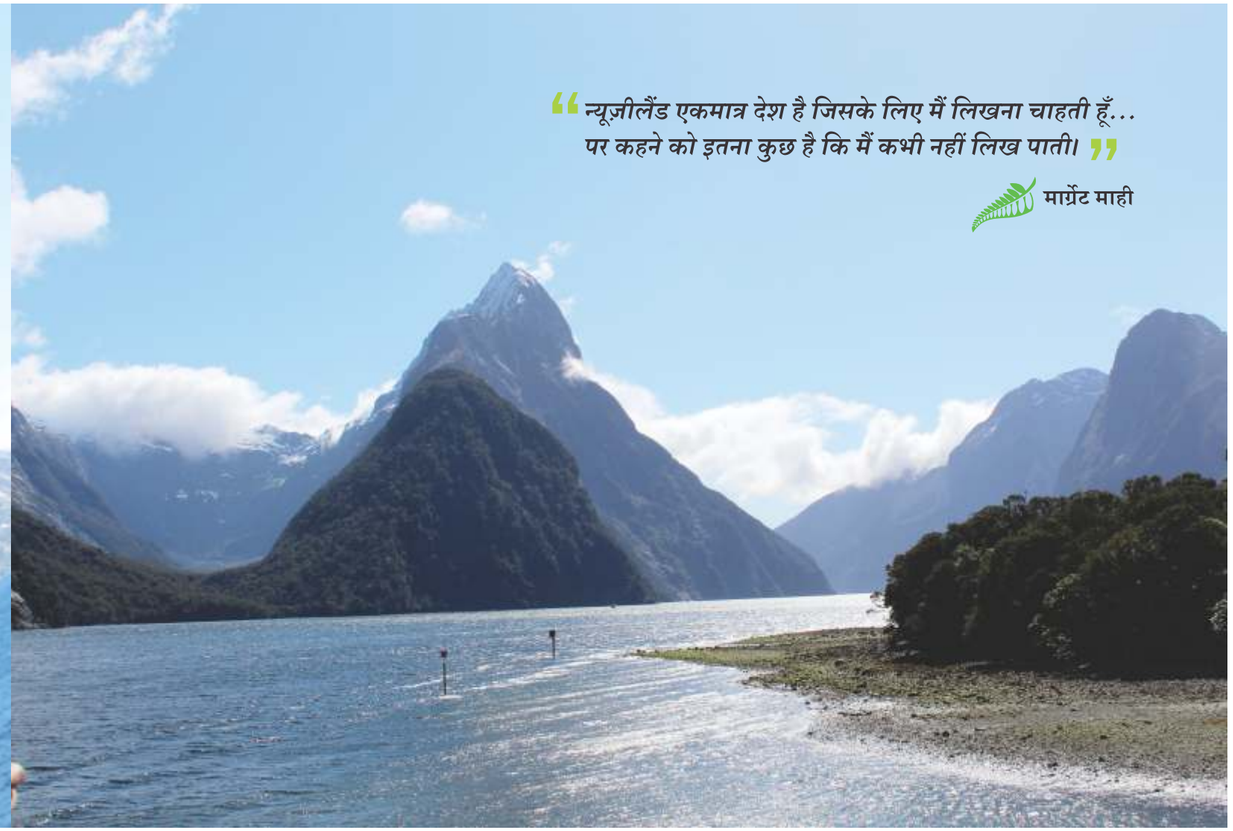

"न्यूज़ीलैंड एकमात्र देश है जिसके लिए मैं लिखना चाहती हूँ... पर कहने को इतना कुछ है कि मैं कभी नहीं लिख पाती।"

मार्ग्रेट माही

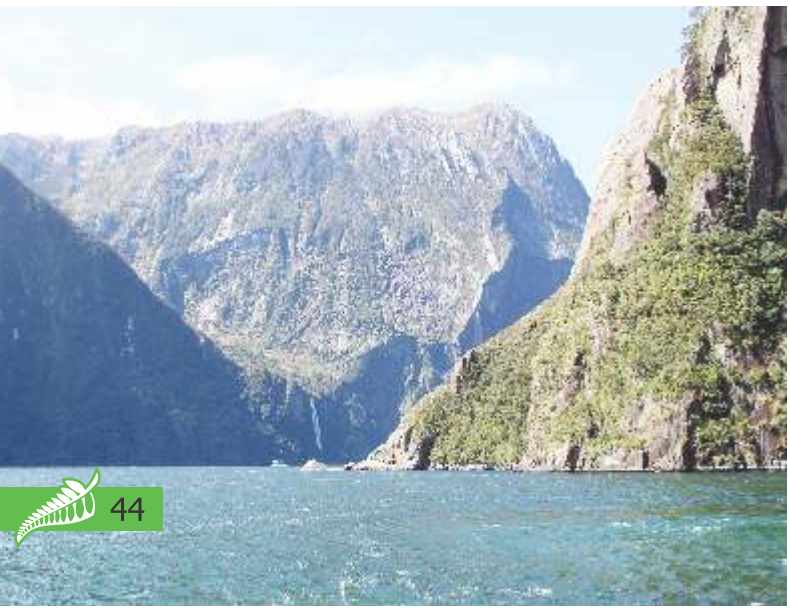

बंजी जम्पिंग क्या होती है यह दुनिया को सिखाने वाला देश न्यूज़ीलैंड ही है। 1980 में ऐलेन हैकेट ने देखा कि प्रशांत महासागर के पास एक आइलैंड में आदिवासी बन्धु पाँव में पेड़ों से निकली लताएँ बाँधकर छलांग लगाते हैं। आदिवासियों का मानना है कि इस करतब के बाद ही लड़कों को सच्चा मर्द कहा जा सकता है। ऐलेन हैकेट को यह करतब देखकर बड़ा आनंद आया। उन्होंने सोचा क्यों न यह अजूबा मैं भी आज़माऊँ? जब वे सफल हो गए तो उन्होंने सरकार से एक सप्ताह के लिए एक ब्रिज किराये पर लिया। पर्यटकों को यह कारनामा देखने और टिकिट लेकर ख़ुद ट्राय करने के लिए आमंत्रित किया। शुरू के तीन दिन तो बहुत लोग आए, करतब भी देखा लेकिन ख़ुद नहीं आज़माया। चौथे दिन ऐलेन ने घोषणा की कि जो बिना कपड़े के यह जम्प लगाएगा उसे....एंट्री फ्री कर दी जाएगी। लोगों की भीड़ बढ़ती गई, पैसा आने लगा और दुकान चल निकली। 1987 में हैकेट पैरिस चले गए। वहाँ जाकर उन्होंने इस कारनामे को लोकप्रिय बनाने की एक नई तरकीब निकाली। वे रात को एफ़िल टावर पर जाकर छुप गए। उनके मित्र ने पत्रकारों को फ़ोन किया कि एक आदमी कल सुबह एफिल टावर से कूदेगा और ज़िंदा भी बचेगा। ठीक 5 बजे हैकेट ने वहाँ बंजी जम्प लगाई और उनका यह कारनामा दुनियाभर में वायरल हो गया। आज बंजी जम्पिंग दुनिया के सबसे लोकप्रिय खेलों में से एक है। इसीलिए इस खेल की जन्मभूमि न्यूज़ीलैंड को हैवन ऑफ़ एडवेंचर स्पोर्ट्स कहा जाता है। पूरा न्यूज़ीलैंड रोमांचकारी कारनामों की खान है। आपको याद होगा विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट पर विजय पताका फहराने वाले एडमंड हिलैरी न्यूज़ीलैंड के ही तो थे।

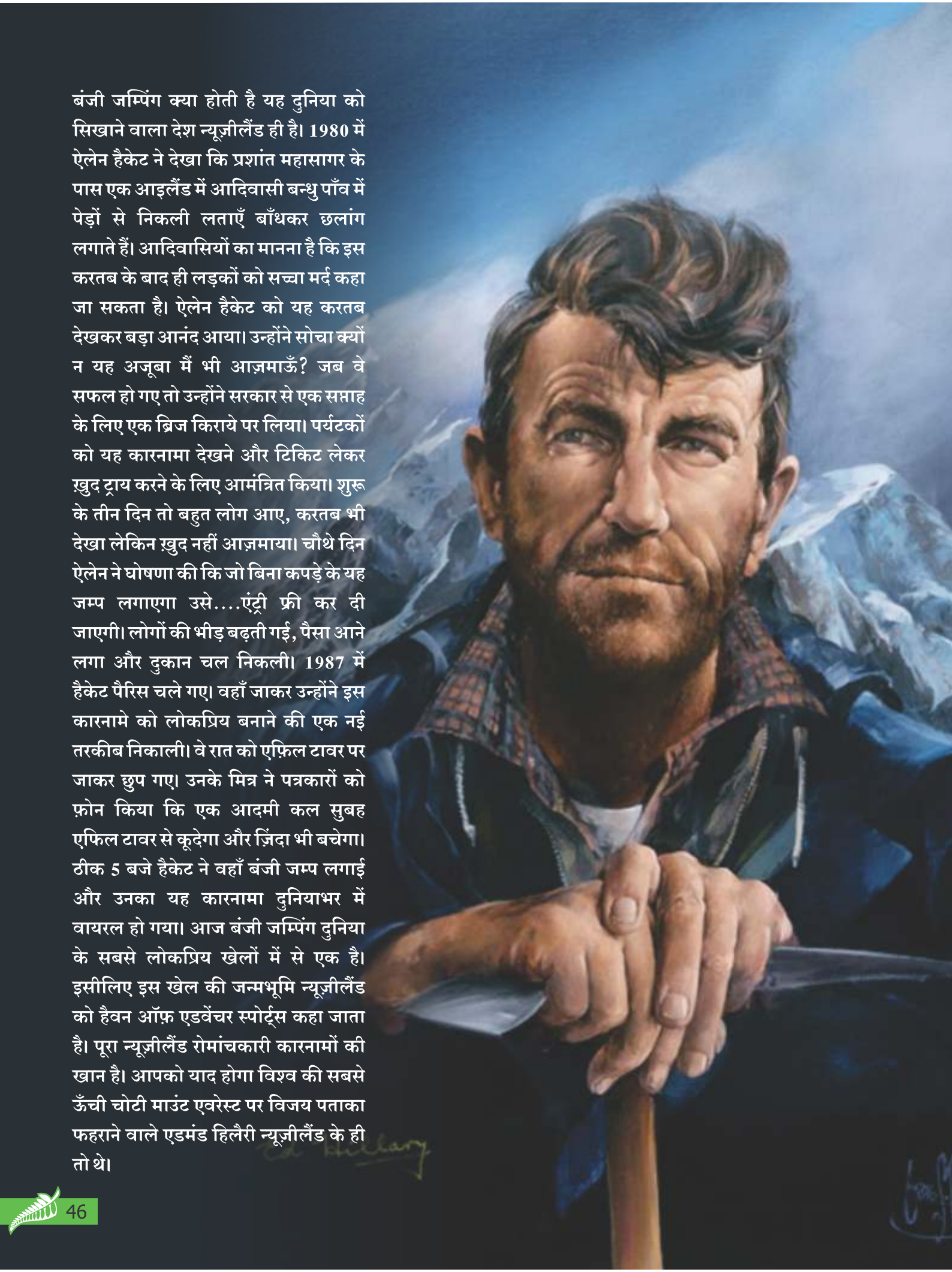

क्वीन्सटाउन को देखने की प्यास बाक़ी ही थी कि हमारा कारवाँ फ्रेन्ज़ जोज़फ़ की ओर चल पड़ा। दिन भर का यह सफ़र फूल, झील, नदी, जंगल और छोटे-छोटे गाँव से हाथ मिलाता हुआ चलता रहा। पब्लिक प्लेसेस पर फुलवारियों को सुरक्षित देखकर ख़ुशी भी होती है और दु:ख भी होता है कि हम अपने देश में ऐसा क्यों नहीं कर पाते। इस रास्ते पर हिन्दुस्तानी फ़िल्मी गीत अपने आप आपके होठों पर मचलने लगता है... सुहाना सफ़र और ये मौसम हसीं। सदर्न वेस्ट कोर्ट ऑफ़ न्यज़ीलैंड का समंदर आपके साथ क़दमताल करता नज़र आता है। हर लहर ठहर जाने के लिए आवाज़ देती है... कम्बख़्त घड़ी है जो रुकने का नाम नहीं लेती। समंदर की लहरें चारों दिशाओं से इस देश के पग पखारती हैं। आपको जानकर कौतुक होगा कि न्यूज़ीलैंड की धरती से समंदर किनारे की अधिकतम दूरी 128 किलोमीटर है। बड़ी मुहब्बत के साथ हमारे पैरों को चूमती प्यारी-प्यारी लहरों को देखकर भरोसा नहीं होता कि इन्होंने कभी जहाज़ भी डुबोए होंगे।

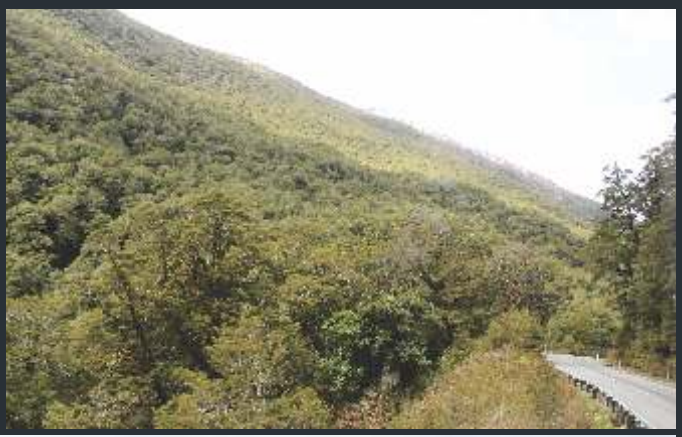

न्यूज़ीलैंड की सैर का असली आनंद तब है जब आपके पास घूमने-फिरने के लिए लंबा समय और अपनी कार हो। यहाँ किराये की गाड़ियाँ बहुत आसानी और वाजिब दाम पर मिल जाती हैं। मौसम से आँख-मिचौली करता सूरज पहाड़ों के पीछे छुप रहा था और आकाश में फैली लालिमा मानों उसकी चुग़ली कर रही थी। दूसरी तरफ़ चाँद अपनी ड्यूटी पर आने के लिए बेसब्र था। इसी दिन और रात की मिलन बेला में आ गया फ्रेंज़ जोज़ेफ। गाँव की आबादी महज़ 400। इतना नन्हा-मुन्ना गाँव हमने तो आज तक नहीं देखा। मासूमियत और इत्मीनान की ज़िंदगी का पर्याय। भारतीय खाने का लुत्फ़ लेने के बाद रात को हम होटल जल्दी लौट आए। अलसुबह फ़ॉक्स ग्लैशियर की सैर पर निकलना था सो सीधे बिस्तर में दुबक गए। फ्रेंज़ जोज़ेफ, फ़ॉक्स ग्लैशियर के खोजी थे। इसीलिए इस गाँव का नाम उनके नाम पर रखा गया। न्यूज़ीलैंड के प्रधानमंत्री सर विलियम फ़ॉक्स ने इस जगह की सैर की थी सो इस ग्लैशियर का नाम हुआ फॉक्स ग्लैशियर। इस ग्लैशियर की सैर हैलिकॉप्टर राइड से होती है।

कंपकपा देने वाली सुबह और चारों दिशाओं से सैलानियों का स्वागत करते बर्फ़ के पहाड़! दिल की गर्मजोशी ने जैसे शीत लहर से लड़ने का फ़ैसला कर लिया। हैलिकॉप्टर ने बस उड़ान ली ही थी कि नज़ारा बदल गया। ज़ुबान सिर्फ़ यह कह रही थी... ख़्वाब से ख़ूबसूरत... स्वर्ग से सुंदर। फिर एक गीत याद आ गया... ख़्वाब हो तुम या कोई हक़ीक़त कौन हो तुम बतलाओ! हैलिकॉप्टर से नज़र आता प्रकृति का हर नज़राना अपनी मुँह दिखाई का आमंत्रण दे रहा था। जीवन में पहली बार ऐसा लगा कि शरीर में दो से ज़्यादा आँखे होना चाहिए।

12 किलोमीटर लंबे इस विशालाकाय ग्लैशियर का सफ़र तय कर हमारा हैलिकॉप्टर खड़ा था उस पहाड़ की चोटी पर बने दुनिया के एक और बड़े ग्लैशियर पर। हैलिकॉप्टर की सीढ़ी से नीचे पाँव रखने की हिम्मत नहीं हो रही थी। मन यह सोचकर डर रहा था कि इतनी निर्मल, स्वच्छ, सफ़ेद बर्फ़ का ग़लीचा कहीं मैला न हो जाए। नीचे उतरकर चारों ओर फ़ैले इस कुदरती करिश्मे की सैर के बारे में यह क़लम कुछ लिख सके इतना सामर्थ्य हम में नहीं। आप तो बस चित्रों से इसका आनंद लीजिए क्योंकि यादें धुंधला जाती हैं... तस्वीरें नहीं।

दोपहर में हम ग्लैशियर्स के पिघले पानी से बनी नदी की सैर के लिए निकल पड़े। बेहद ख़तरनाक पहाड़ी-नदी। पानी की गति फ़ार्मूला-1 कार की स्पीड से कुछ ज़्यादा ही होगी। रास्ते में पत्थर, चट्टान और झरने पुराने हिम-स्खलन के जीते-जागते सुबूत थे। हमें बताया गया कि बर्फ़ पिघलने से यदि अचानक बाढ़ आ जाए तो मिनटों में यह पूरा अंचल पानी में डूब जाता है अतः हर वक़्त भागने के लिए तैयार रहना होता है। ग्लैशियर 80 मीटर प्रतिवर्ष की दर से पिघल रहा है और आने वाले 300 बरसों में यह ख़त्म हो जाएगा। इस ग्लैशियर नदी की रोमांचकारी सैर ज़िंदगी भर नहीं भूलेगी।

फ्रेन्ज़ जोज़फ़ को पूरा देखने की अधूरी प्यास लेकर हम निकल पड़े क्राइस्टचर्च की ओर। इन दोनों को आपस में मिलाने वाला किंग आर्थर पास दुनिया के सबसे पुराने रास्तों में से एक है। यह सदर्न आल्प्स को आपस में जोड़ता है। शायद आपने नहीं सुना हो कि पहाड़ के क़द भी समय के साथ बड़े हो जाते हैं; नहीं सुना है ना ! तो सुनिये। सदर्न आल्प्स दुनिया का सबसे तेज़ी से बढ़ने वाला पहाड़ है।

इसका क़द 2 सेंटीमीटर की दर से प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। रास्ते में ऐरोटाउन के सुंदर नज़ारे दिखते हैं। इसे दुनिया में हिरणों की राजधानी भी कहा जाता है। रास्ते के साथ-साथ एक सुरक्षित बाउंड्री लगा दी गई है जिसके उस पार वन्य जीव निश्चिंत घूमते नज़र आते हैं। सफ़र के मुक़ाम में आई ज़ैड फ़ैक्ट्री में समुद्र की तलहटी से निकले कुदरत के बेशक़ीमती तोहफ़े आँखे चौंधियाँ देते हैं। हुनरमंद कलाकारों द्वारा रचे पत्थर के निर्जीव चित्र सजीव नज़र आते हैं। दोपहर तक हम क्राइस्टचर्च पहुँच गए हैं।

क्राइस्टचर्च - 22 फ़रवरी 2011 को आए एक भूकंप ने इस शहर को हिलाकर रख दिया था। भूकंप के दौरान अमूमन धरती हॉरिज़ेंटली हिलती है पर यहाँ यह भूचाल वर्टिकली था। धरती कहीं 1 मीटर ऊपर तो कहीं नीचे आ गई। निचले हिस्सों में बाढ़ का प्रकोप था। वैसे भी यह एक कुदरती मार ही तो है कि यह पूरा देश प्रतिवर्ष 8 एम.एम. नीचे खिसक रहा है। भूकंप के दौरान अनेक ऐतिहासिक महत्व की इमारतें ध्वस्त हो गई हैं। हमारी होटल नोवाटेल के सामने स्थित क्राइस्ट चर्च केथेड्रल वह इमारत है जिसे भारी नुकसान हुआ था। हमारे टूर मैनेजर कॉक्स एण्ड किंग्स के श्री टोपीवाला ने बताया कि इस चर्च को उस भूकंप की याद में जस का तस रखा गया है। जितने रोचक व्यक्ति टोपीवाला थे उतने ही ज़िंदादिल थे हमारे ड्रायवर रैग जो ऑस्ट्रिया के इंजीनियर थे। ध्यान रहे यहाँ की कोच में कंडक्टर नहीं होता। सुरक्षा की दृष्टि से ड्रायवर के लिए अलग से कोई दरवाज़ा भी नहीं रखा जाता। वह भी यात्रियों के दरवाज़े से नीचे उतरता-चढ़ता है।

3,80,000 लोगों की जनसंख्या वाला क्राइस्टचर्च, ऑकलैण्ड और वैलिंगटन के बाद न्यूज़ीलैंड का तीसरा सबसे बड़ा शहर है। इस शहर के बॉटनिकल गार्डन को वनस्पति शास्त्र का एनसाइक्लोपीडिया या संग्रहालय कह सकते हैं। यदि आप इसे एक बार इत्मीनान से देख-समझ लें तो आप भी वनस्पति शास्त्री बन सकते हैं। पर... इसके लिए आपको इस गार्डन में हफ़्तों बिताने होंगे। है आपके पास इतना समय? नहीं ! तो आइये कम से कम इस बग़ीचे के ख़ूबसूरत फूलों को निहार लिया जाए। वास्तव में फूलों के यह मंज़र मख़्दूम मोइनुद्दीन की ग़ज़ल का शे'र याद दिला देते हैं... फूल खिलते रहेंगे दुनिया में... रोज़ निकलेगी बात फूलों की।

यहाँ का म्यूज़ियम न्यूज़ीलैंड के इतिहास के पन्ने खोलने वाला दस्तावेज़ है। यदि आप इतिहास के विद्यार्थी हैं तो यहाँ आपके हर प्रश्न का समाधान हाज़िर है।

क्राइस्टचर्च का हैग्ली ओवल स्टेडियम वास्तु की अद्‌भुत मिसाल पेश करता है एकदम खुला-खुला... सारी बाधाओं, बैरियर्स, गेट और बंधनों से परे। यह वही स्टेडियम है जहाँ हिन्दुस्तान के जीनियस क्रिकेटर राहुल द्रविड़ ने न्यूज़ीलैंड के ख़िलाफ दोहरा शतक लगाया था।

न्यूज़ीलैंड में लंबे समय तक ब्रिटेन की महारानी की हुकूमत रही है। आज़ादी के बाद यह प्रश्न उठा था कि न्यूज़ीलैंड पर बर्तानिया के राज परिवार का दख़ल होना चाहिए या नहीं? जनमत संग्रह हुआ और सभी ने ब्रिटेन की महारानी की हुकूमत स्वीकार की। आज भी न्यूज़ीलैंड के राष्ट्रीय ध्वज पर यूनियन जैक नज़र आता है। न्यूज़ीलैंडवासी ऑस्ट्रेलिया को अपना बड़ा भाई मानते हैं। अंग्रेज़ों ने यहाँ गाँव, शहर और चर्च बसाए तथा सरकार का गठन किया। न्यूज़ीलैंड में एशियाई लोगों की बड़ी तादाद है। यह मुल्क स्वच्छता, पर्यावरण और ऊर्जा के प्रति अत्यंत सजग है। हर तरफ़ डस्टबिन से ज़्यादा री-साइकलबिन नज़र आते हैं। पानी की कोई किल्लत नहीं फिर भी पानी बचाने के लिए फ्लॅश में दो बटन वाला ऑप्शन इसी देश की देन है। सफ़ाई के लिए हर गली का साप्ताहिक क्रम तय है। उस दिन कचरा गाड़ी आती है और दरवाज़े के बाहर रखी कचरे की थैली को उठा ले जाती है। अंग्रेज़ी, मावरी और साइन लैंग्वेज यहाँ की प्रमुख भाषाएँ हैं। साइन लैंग्वेज को मान्यता देने वाला यह दुनिया का पहला देश है। मछली, भेड़ और हिरण पालन न्यूज़ीलैंड का मुख्य व्यवसाय है। अंगूर, बारली, ओट्स और गेहूँ प्रमुख फ़सलें है। डेयरी प्रॉडक्ट्स, वाइन और बीफ़ अन्य कारोबारों में प्रमुख हैं। देश पूरी तरह प्रदूषण मुक्त है क्योंकि कल-कारखाने नहीं के बराबर हैं। पब्लिक ट्रांसपोर्ट के प्रति आकर्षण का आलम यह है कि वह प्रायवेट ट्रांसपोर्ट की तुलना में कई गुना महँगा है। यह सुनकर भी सुख मिलता है कि सन् 1893 ही न्यूज़ीलैंड ने अपने देश की नारी शक्ति को मतदान का अधिकार दे दिया था। ऐसा करने वाला वह दुनिया का सबसे पहला मुल्क बना।

2,68,000 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल वाले इस देश को दो भागों में बाँट सकते हैं। नॉर्थ न्यूज़ीलैंड स्थित ऑकलैंड व्यवसायिक और वैलिंगटन राजनैतिक राजधानी है। जैसे हमारे यहाँ मुंबई और दिल्ली। प्रमुख शहर होने के कारण इन शहरों में प्रशासनिक और व्यवसायिक गतिविधियाँ बहुत अधिक हैं। साउथ न्यूज़ीलैंड अपनी प्राकृतिक संपदा और सुंदरता के साथ करोड़ों पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। शायद आपको यक़ीन न आए लेकिन यह सच है कि पूरे साउथ न्यूज़ीलैंड की जनसंख्या ऑकलैंड शहर की आबादी से भी कम है। 45 लाख की जनसंख्या वाले इस देश में 74% युरोपियन्स, 15% मावरी और 11% एशियन्स की आबादी है। जनसंख्या का घनत्व एक वर्ग किलोमीटर में मात्र 17 व्यक्ति है। न्यूज़ीलैंड का मावरी नाम है आयटर्बा यानि लंबे सफ़ेद बादल वाली ज़मीन।

यहाँ गाड़ियों के नंबर न्यूमिरिकल (अंकों में) के अलावा अल्फ़ाबेटिकल (शब्दों में) भी लिए जा सकते हैं। 1000 न्यूज़ीलैंड डॉलर जमा करवाकर मन-पसंद नाम आवेदन कर प्राप्त किया जा सकता है। क्राइस्टचर्च में भारतीय व्यंजनों के होटल लिटिल इंडिया के संचालक जोश साहब ने अपनी कार का नंबर लिया है L-India..... ग़ौरतलब है कि लिटिल इंडिया की न्यूज़ीलैंड में 16 शाखाएँ हैं। बुज़ुर्गों को सम्मान देना कोई न्यूज़ीलैंडवासियों से सीखे। 75 वर्ष से अधिक की उम्र के लोगों के लिए तक़रीबन हर चीज़ मुफ़्त है। देश की औसत उम्र 84 वर्ष है।

L INDIA

विचित्र किंतु सत्य है कि न्यूज़ीलैंड की कुल आबादी में 5% की संख्या इंसानों की है और 95% प्राणियों की। न्यूज़ीलैंड के अधिकांश पक्षी उड़ नहीं सकते क्योंकि उन्हें उड़ने की ज़रूरत ही नहीं। कुत्ते, बिल्ली या अन्य हमलावर पशु हैं ही नहीं। स्तनधारी जीवों में सिर्फ़ चमगादड़ दिखाई देती है। बाक़ी जो भी प्राणी आए हैं वे अप्रवासी हैं। यहाँ न तो साँप हैं न अन्य ज़हरीले जीव-जन्तु। पालतू कुत्तों को सड़कों पर शौच नहीं करवाया जा सकता। साथ में एक कैरी बैग रखना होती है जिसे स्ट्रीट पोल पर लगी पेटी में डालना होता है। देश में 45 लाख़ लोगों पर 4 करोड़ भेड़े हैं। पालतू जानवरों का रजिस्ट्रेशन करवाना अनिवार्य है जिनके लिए बाक़ायदा एक आयडेंटिटी कार्ड जारी करवाया जाता है। यह अलग बात है कि हम भारतवासी अभी भी मनुष्यों का आई कार्ड बनाने के लिए ही जूझ रहे हैं।

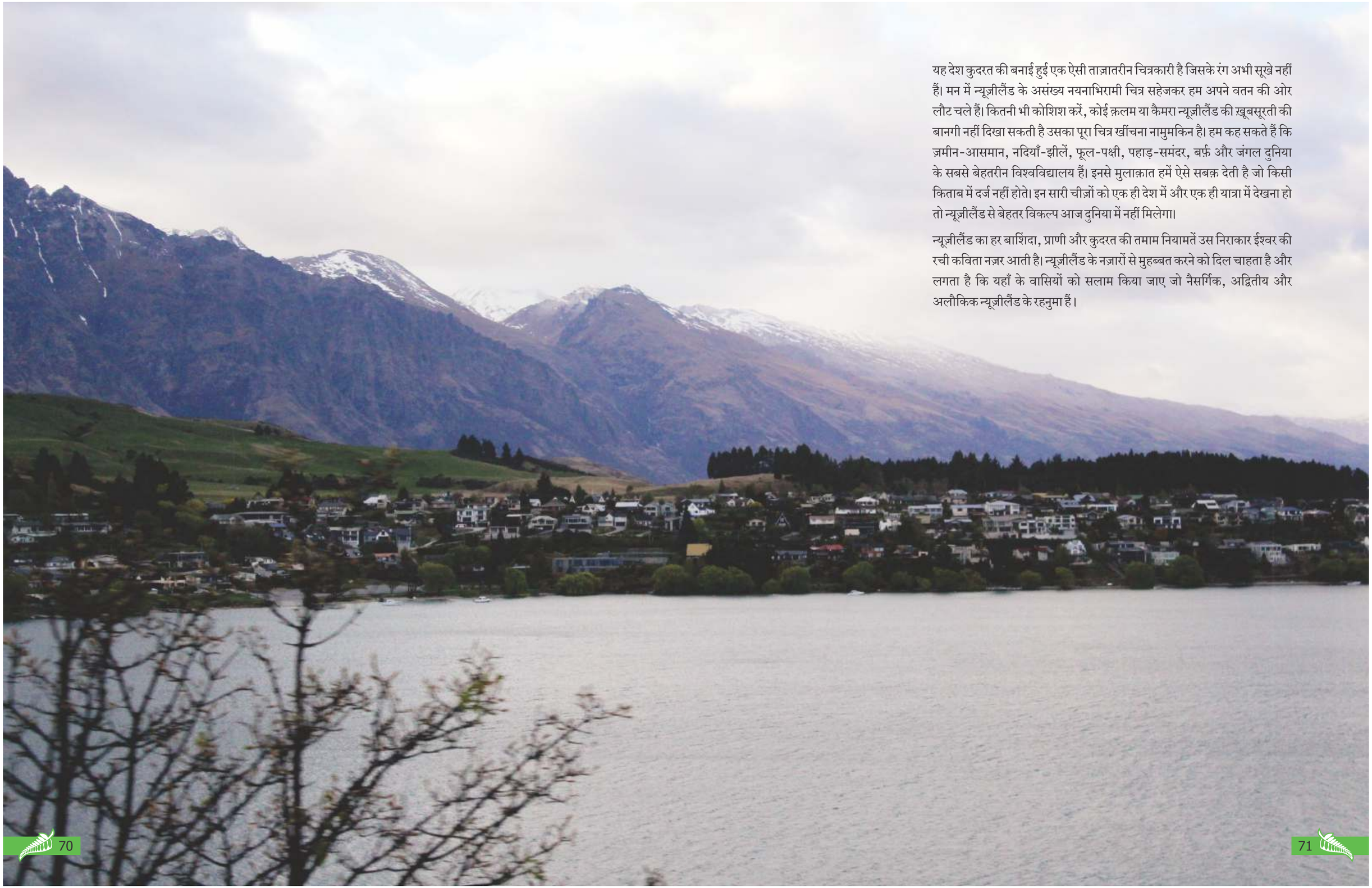

यह देश कुदरत की बनाई हुई एक ऐसी ताज़ातरीन चित्रकारी है जिसके रंग अभी सूखे नहीं हैं। मन में न्यूज़ीलैंड के असंख्य नयनाभिरामी चित्र सहेजकर हम अपने वतन की ओर लौट चले हैं। कितनी भी कोशिश करें, कोई क़लम या कैमरा न्यूज़ीलैंड की ख़ूबसूरती की बानगी नहीं दिखा सकती है उसका पूरा चित्र खींचना नामुमकिन है। हम कह सकते हैं कि ज़मीन-आसमान, नदियाँ-झीलें, फूल-पक्षी, पहाड़-समंदर, बर्फ़ और जंगल दुनिया के सबसे बेहतरीन विश्वविद्यालय हैं। इनसे मुलाक़ात हमें ऐसे सबक़ देती है जो किसी किताब में दर्ज नहीं होते। इन सारी चीज़ों को एक ही देश में और एक ही यात्रा में देखना हो तो न्यूज़ीलैंड से बेहतर विकल्प आज दुनिया में नहीं मिलेगा।

न्यूज़ीलैंड का हर बाशिंदा, प्राणी और कुदरत की तमाम नियामतें उस निराकार ईश्वर की रची कविता नज़र आती है। न्यूज़ीलैंड के नज़ारों से मुहब्बत करने को दिल चाहता है और लगता है कि यहाँ के वासियों को सलाम किया जाए जो नैसर्गिक, अद्वितीय और अलौकिक न्यूज़ीलैंड के रहनुमा हैं।

"न्यूज़ीलैंड एक छोटा सा देश नहीं बल्कि एक बड़ा गाँव है।"

पीटर जैक्सन

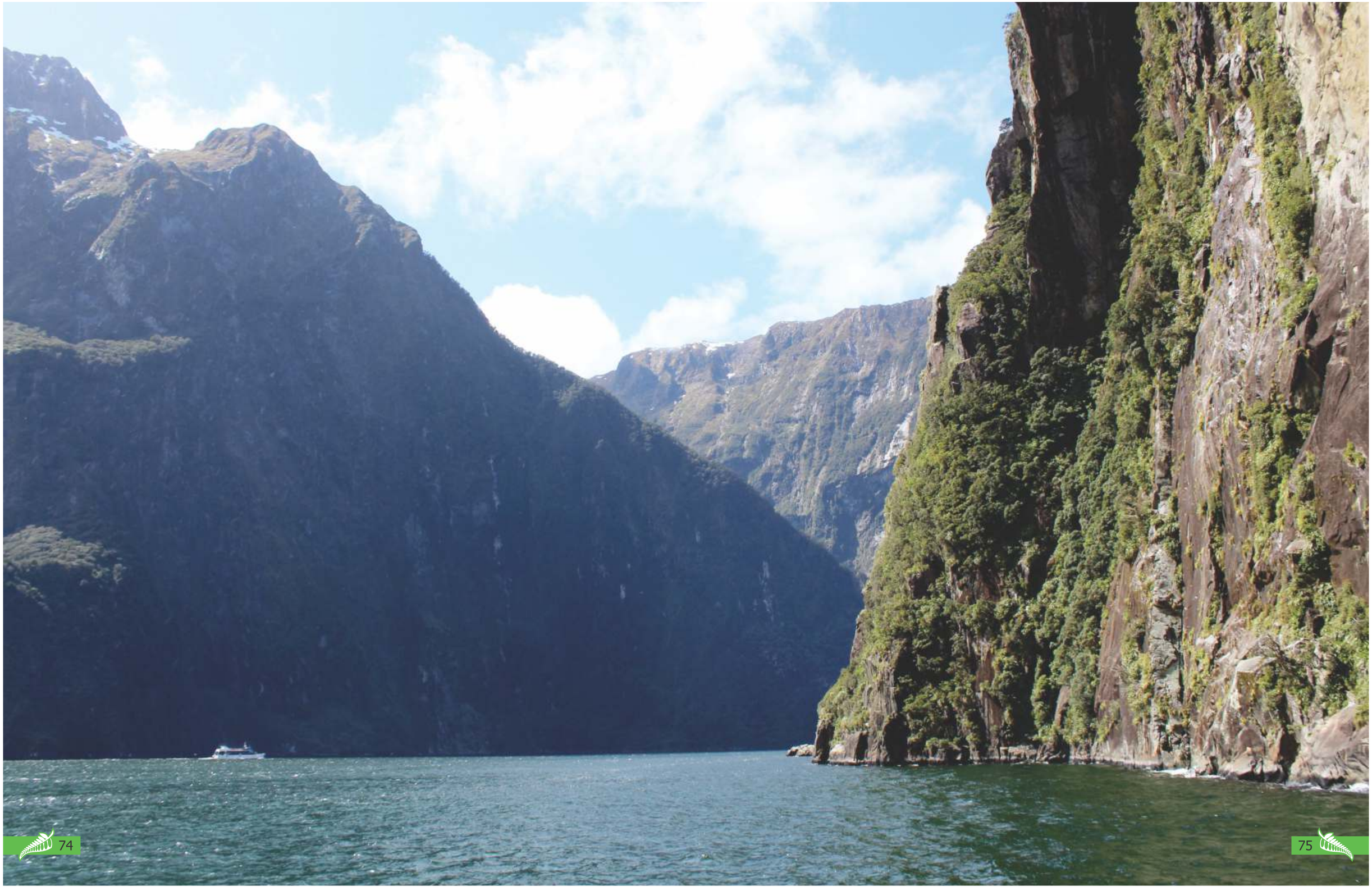

New Zealand

Country in Oceania

New Zealand is a country in the southwestern Pacific Ocean consisting of 2 main islands, both marked by volcanoes and glaciation. Capital Wellington, on the North Island, is home to Te Papa Tongarewa, the expansive national museum. Wellington's dramatic Mt. Victoria and the South Island's Fiordland and Southern Lakes stood in for mythical Middle Earth in Peter Jackson's "Lord of the Rings" films.

Capital : Wellington

Dialing code : +64

Currency : New Zealand dollar

Population : 4.471 million (2013) World Bank

Continent : Oceania

पल्लव सेठी - पर्व सेठी

खण्डवा (म.प्र.) के निवासी पल्लव सेठी ने प्रेस्टीज इंस्टीट्यूट, इंदौर से व्यवसाय प्रबंधन में स्नातक डिग्री हासिल की और बाद में नरसी मूनजी कॉलेज, मुंबई से एंटरप्रोन्योरशिप और फ़ैमेली बिजनेस की मास्टर डिग्री। 22 बरस की उम्र तक 22 से अधिक मुल्कों की सैर ने पल्लव को ज़िंदगी देखने का एक जुदा नज़रिया दिया है। इस किताब के शब्दांकन के लिए पल्लव पूरी यात्रा में अपनी डायरी और क़लम के साथ मसरूफ़ रहे। शिक्षा पूरी करने के बाद पल्लव नई सोच, तरीक़े और रचनाशीलता से अपना स्टार्ट अप 'टायरवाला' ला रहे हैं।

जीवन के 20 बसंत देख चुके पर्व का जन्म भी खण्डवा का ही है। आईपीएस कॉलेज, इन्दौर से आर्किटेक्ट की डिग्री ले रहे पर्व को विभिन्न आकारों, आकृतियों और दृश्यावलियों को कैमरे में क़ैद करने का ख़ास शग़ल है। एक तरह से पर्व के लिए फ़ोटोग्राफ़ी ऑक्सीजन है। ज़ाहिर है नैसर्गिक न्यूज़ीलैंड के नज़ारों को पर्व ने ही अपने कैमरे से छाया चित्रों में ढाला है।

पर्व और पल्लव के पिता टायर व्यवसायी आलोक सेठी सुपरिचित लेखक एवं कवि हैं। जीवन मूल्यों, प्रबंधन, कविता, शायरी और कहानी पर उनकी 8 किताबें मुकम्मल हो चुकी हैं।

शब्द की विरासत से परवाज़ भरते दो पंछी

पल्लव और पर्व सेठी को शब्दप्रेम विरासत में मिला है। यह नये ज़माने के बच्चे हैं और अपनी पढ़ाई से हटकर ज़िंदगी की दीगर चीज़ों पर भी नज़र खुली रखने का जज़्बा रखते हैं। भाई आलोक सेठी के यह दो होनहार बिरवे 'नैसर्गिक न्यूज़ीलैंड' के नाम से यायावरी, छायाकारी और पर्यटन पर एक ख़ूबसूरत किताब लेकर आपसे रूबरू हो रहे हैं। घूमने तो सभी जाते रहते हैं लेकिन कितने हैं जो यात्राओं का दस्तावेज़ीकरण कर पाते हैं। दरअसल यह हुनर इन्हें विरासत में मिला है। भाई आलोक भी दुनियाभर की अपनी यात्राओं को 'दुनिया रंग-बिरंगी' नाम से प्रकाशित कर ही चुके हैं। कहते भी हैं न कि 'मछली के बच्चे को तैरना नहीं सिखाना पड़ता'... कुछ ऐसी ही बात पल्लव और पर्व के बारे में कही जा सकती है। इस किताब को सजाते वक़्त हमें ऐसा लगा मानों हम भी पल्लव और पर्व के साथ न्यूज़ीलैंड घूम आए हैं। संस्मरणों और चित्रों की ख़ूबसूरत जुगलबंदी करती यह किताब एक साँस में पढ़ जाने का जज़्बा जगाती है। पल्लव और पर्व को दिल से बधाई।

मैं शुभकामनाएँ प्रकट करने के साथ ही यह भी दुआ करता हूँ कि पल्लव और पर्व अपने लेखन प्रेम को विस्तार दें जिससे उनके हस्ते कुछ नये-नये उन्वानों से कुछ नई किताबें ज़माने तक पहुँच सकें। हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम नई नस्ल की कोशिशों का एहतराम करते रहें। पल्लव और पर्व के इस कारनामें से यह भी साबित होता है कि हमारी आने वाली पीढ़ी भी लिखने-पढ़ने में ख़ासी रूचि रखती है। हमारी पीढ़ी को चाहिए कि हम वॉट्स एप्प, फ़ेसबुक, ईमेल, इंस्टाग्राम और ट्विटर की जनरेशन-नेक्स्ट को भी सराहते रहें जिससे उनका मन लिखने-पढ़ने की अभिरूचियों में बना रहे।

पल्लव और पर्व के लिए यही दुआ है कि उनके मन में अच्छे विचार पल्लवित होते रहें जिससे जीवन, परिवेश और समाज में सुखद पर्वों की आवाजाही बनी रहे।

संजय पटेल
समीक्षक एवं संस्कृतिकर्मी

sanjaypatel1961@gmail.com +91 97525 26881

ग्रीक लोकनायक यूलिसिस अनेक देशों पर विजय प्राप्त करके अपनी माँ से मिलने गए तो उनकी माँ ने कहा कि फिर से देशों की यात्रा करो और इस बार योद्धा की तरह मत जाना वरन् ज्ञान की खोज के लिए छात्र की तरह जाना। यात्राएँ दोहरी खोज में मदद करती हैं। एक तो नए देशों और उनमें रहने वालों के रीति-रिवाज की जानकारी मिलती है, दूसरे इसी प्रक्रिया में आप स्वयं को भी जान लेते हैं। स्वयं को समझ लेना ही ईश्वर को समझने की तरह है। इसीलिए कहते हैं आत्मनः विद्धि। सेठी परिवार के सारे सदस्य प्रायः यात्राओं पर जाते हैं। यात्राओं के दृश्य अपने कैमरे में क़ैद करते हैं तो ये दृश्य और ध्वनियाँ उनके हृदय में सदैव गूँजती रहती हैं। सेठी परिवार की यात्राओं से याद आती है शैलेन्द्र की पंक्तियाँ -

चलते-चलते थक गया मैं और साँझ भी ढलने लगी।
तब राह ख़ुद मुझे अपनी बाहों में लेकर चलने लगी।।

जयप्रकाश चौकसे
वरिष्ठ फ़िल्म समीक्षक एवं स्तंभ लेखक

यात्राएँ तो कई लोग करते हैं लेकिन उससे मिले अनुभव और दृश्यों को साझा कुछ लोग ही कर पाते है। पल्लव के शब्दों और पर्व के चित्रों की जुगलबंदी से निकली रागिनी 'नैसर्गिक न्यूज़ीलैंड' मन के तारों को सुरीली झंकार देती है। यह एलबम न केवल मनोहारी है बल्कि इस बात को भी ग़लत साबित करता है कि आज का युवा सिर्फ़ फेसबुक और वॉट्सएप्प पर व्यस्त है। मुझे गर्व है कि पर्व सेठी हमारे ही संस्थान में अर्किटेक्चर स्टूडेंट हैं।

अचल चौधरी
निदेशक, आई.पी.एस. कॉलेज, इन्दौर

कल रात ही न्यूजीलैंड की यात्रा कर लौटी हूँ.... ग़लतफहमी में मत रहिएगा, मैं टूर पर नहीं गई थी बल्कि रात भर इस चलचित्र को निहार रही थी जिसका नाम है 'नैसर्गिक न्यूजीलैंड'।

पल्लव हमारे कॉलेज में एम.बी.ए. (एंटरप्रोन्योरशिप) का छात्र रहा है। उसके साथ कई देशों की यात्राएँ भी की हैं। किसी भी देश को देखने, समझने का उसका विजन हमेशा औरों से हटकर होता था। पल्लव के नज़रिए को काग़ज़ पर उतरते देखना बड़ा ही सुखद लग रहा है। पर्व के छायाचित्र पाठक के साथ बतियाते प्रतीत होते हैं। उम्मीद है ऐसे प्रकाशन हमारी नई जनरेशन को नेचर के क़रीब लाने में मददगार साबित होंगे।

सीमा महाजन
डायरेक्टर, इ एंड एफ.बी.
नरसी मूनजी इंस्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट, मुंबई

रंग प्रकाशन
33, बक्षी गली, राजबाड़ा, इन्दौर-452 004
e-mail: info@jainsonbookworld.com
Visit our web book store at
www.jainsonbookworld.com

ISBN NO. 978-81-88423-67-5
978-81-88423-67-5
₹ 200.00